(भाग १ से ८ का सेट)

अरेबियन नाइट्स

(बच्चों के लिए अदभुत रोचक कहानियाँ) ८

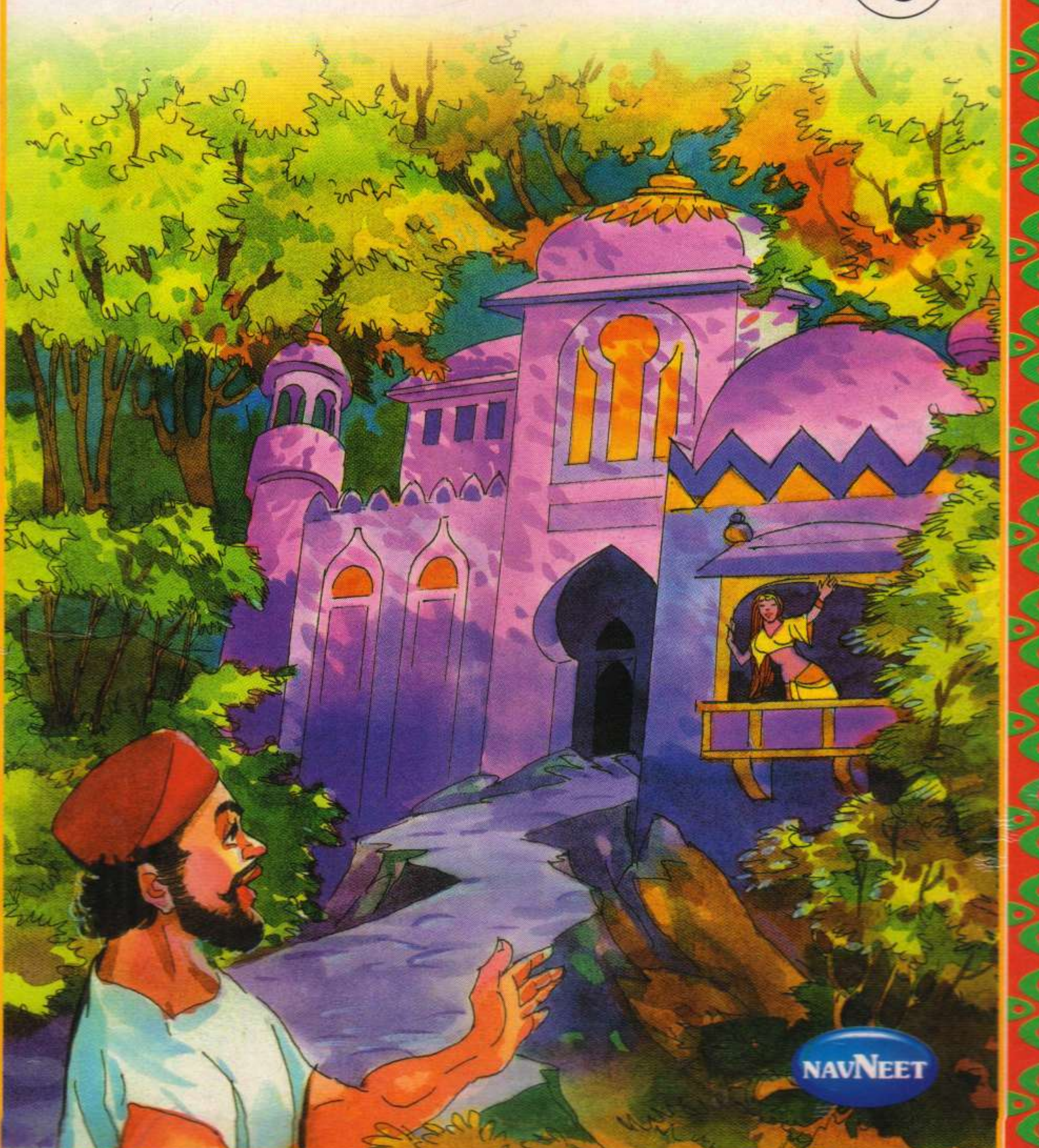

NAVNEET

कहानियाँ ...

'अरेबियन नाइट्स' की कहानियाँ प्राचीन भारतीय, फारसी एवं अरबी लोक कथाओं से ली गई हैं। ये कहानियाँ बाल साहित्य की उत्तम रचनाएँ मानी जाती हैं।

एक सुलतान शहरजादी नाम की एक सुंदर लड़की से शादी करता है। मगर अगले ही दिन वह उसे मार डालना चाहता है। चतुर शहरजादी अपनी जान बचाने के लिए रोचक कहानियों का सहारा लेती है। वह सुलतान को हर रात कौतूहलपूर्ण कहानियाँ सुनाती है। इससे सुलतान की जिज्ञासा बढ़ती जाती है। वह हर बार यह जानने के लिए लालायित हो उठता है कि इसके बाद क्या हुआ...? शहरजादी का कहानी सुनाने का यह सिलसिला १००१ रात तक चलता रहता है।

रोचक कहानियों की इस पुस्तक-शृंखला में 'अरेबियन नाइट्स' की चुनी हुई कहानियाँ शामिल की गई हैं। सरल, सुबोध एवं रोचक भाषा-शैली में लिखी हुई ये कहानियाँ बच्चों को मनोरंजन प्रदान करने के साथ-साथ उनके नैतिक, व्यावहारिक एवं बौद्धिक ज्ञान को बढ़ाने वाली हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि इस पुस्तक के मनोहारी रंगीन चित्र बच्चों का मन मोह लेंगे।

© **All rights reserved. No part of this book may be copied, adapted, abridged or translated, stored in any retrieval system, computer system, photographic or other system or transmitted in any form or by any means without the prior written permission of the copyright holders, M/s. Navneet Publications (India) Ltd.** ***Any breach will entail legal action and prosecution without further notice.***

NAVNEET®

नवनीत पब्लिकेशन्स (इण्डिया) लिमिटेड

मुंबई : १. नवनीत भवन, भवानीशंकर रोड, दादर, **मुंबई–४०० ०२८।** (फोन : ६६६२ ६५६५ • फैक्स : ६६६२ ६४७०)

Visit us at : www.navneet.com	**e-mail :** npil@navneet.com

२. **नवयुग डिस्ट्रिब्यूटर्स :** रोड नं. ८, एम. आई. डी. सी., इंडियन इन्स्टिट्यूट ऑफ पैकेजिंग के पास, मरोल, अंधेरी (पूर्व), **मुंबई–४०० ०९३।** (फोन : २८२१ ४१८६ • फैक्स : २८३५ २७५८)

अहमदाबाद : नवनीत हाउस, गुरुकुल रोड, मेमनगर, **अहमदाबाद–३८० ०५२।** (फोन : ६६३० ५०००)

बैंगलुरू : श्री बालाजीस्, नं. १२, दूसरी मंजिल, तीसरा क्रॉस, मल्लेश्वरम्, **बैंगलुरू–५६० ००३।** (फोन : २३४६ ५७४०)

चेन्नई : ३०, श्रीराम नगर, नॉर्थ स्ट्रीट, अल्वारपेट, **चेन्नई–६०० ०१८।** (फोन : २४३४ ६४०४)

दिल्ली : २-ई/२३, ओरिअन प्लाज़ा, दूसरी मंजिल, झंडेवालां इक्स्टेंशन, **नई दिल्ली–११० ०५५।** (फ़ोन : २३६१ ०१७०)

हैदराबाद : कल्कि प्लाज़ा, प्लॉट नं. ६७, कृष्णपुरी कॉलोनी, वेस्ट मरेडपल्ली, **सिकंदराबाद–५०० ०२६।** (फोन : २७८० ०१४६)

कोलकाता : पहली मंजिल, ७, सुरेन टैगोर रोड, **कोलकाता–७०० ०१९।** (फोन : २४६० ४१७८)

नागपुर : ६३, शिवाजी सायन्स कॉलेज के सामने, काँग्रेस नगर, **नागपुर–४४० ०१२।** (फोन : २४२ १५२२)

नाशिक : निर्माण इंस्पायर, दूसरी मंजिल, कान्हेरे वाड़ी, ओल्ड सीबीएस के सामने, **नाशिक–४२२ ००१।** (फोन : २५९ ६९५०)

नवसारी : ३/सी, अरविंद नगर सोसाइटी, लुन्सीकुई रोड, **नवसारी–३९६ ४४५।** (फोन : २४४ १८६)

पटना : २०५, जगदंबा टावर, दूसरी मंजिल, सहदेव महतो मार्ग, श्रीकृष्णपुरी, **पटना–८०० ००१।** (फोन : २५४ ०३२१)

पुणे : नवनीत भवन, १३०२, शुक्रवार पेठ, सणस प्लाज़ा के पास, बाजीराव रोड, **पुणे–४११ ००२।** (फोन : २४४३ १००७)

राजकोट : २०-२१, जागनाथ कॉर्नर, धनरजनी बिल्डिंग के पीछे, याज्ञिक रोड, **राजकोट–३६० ००१।**

सुरत : नं. १, ग्राउंड फ्लोर, श्री वल्लभ कॉम्प्लेक्स, कोटवाल स्ट्रीट, नानपरा, **सुरत–३९५ ००१।** (फोन : २४६ ३९२७)

वडोदरा : हनुमान वाड़ी के पास, सरदार भुवन की गली में, **वडोदरा–३९० ००१।**

(भाग १ से ८ का सेट)

अरेबियन नाइट्स

(बच्चों के लिए अदभुत रोचक कहानियाँ)

८

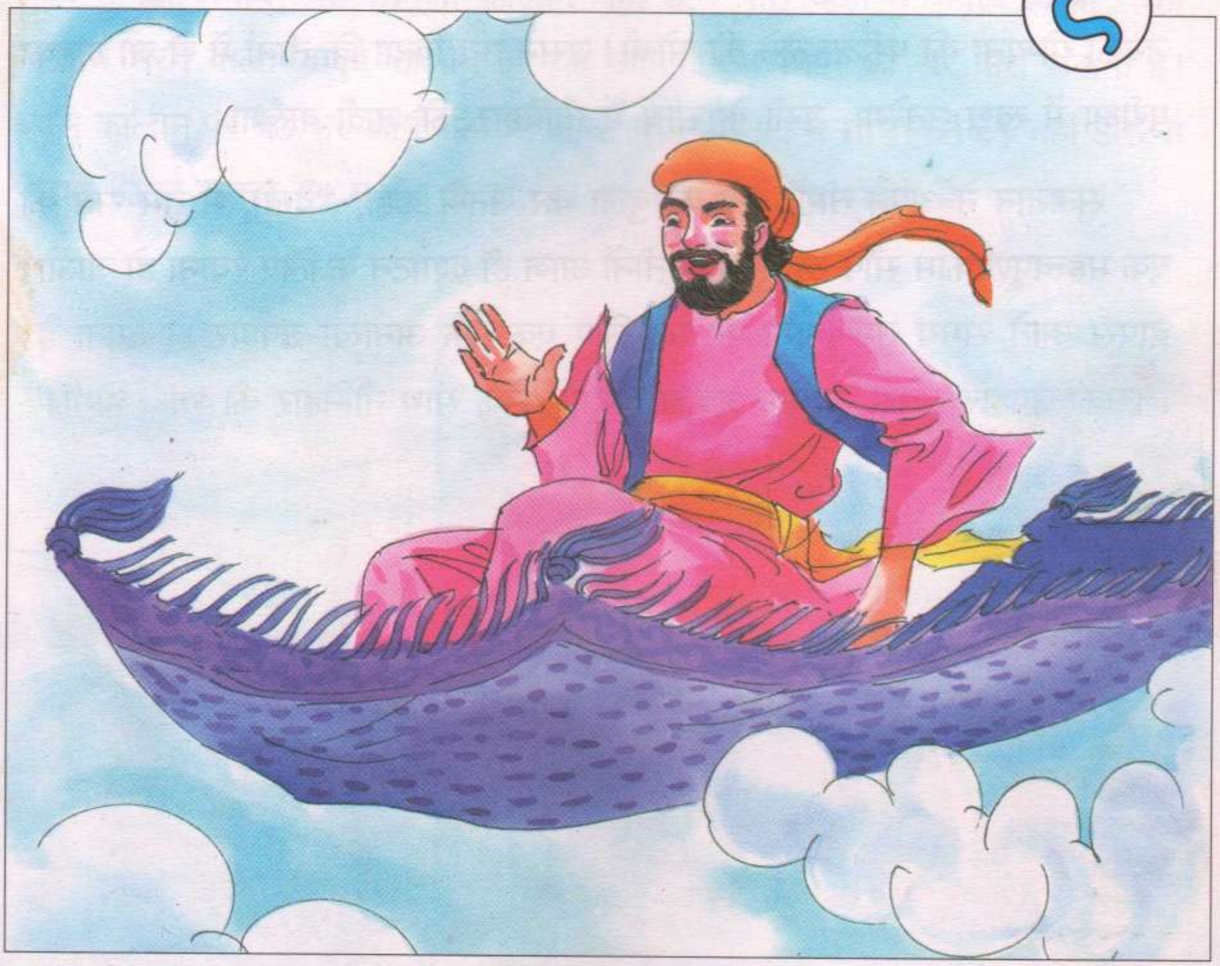

१. परी प्यारी बानू

२. खुदादाद की पितृभक्ति

सम्पादक : भीखाभाई सुथार और राजेशकुमार मिश्र

चित्रांकन : महेन्द्र मिस्त्री

NAVNEET

NAVNEET GALA VIKAS
PRICE Rs. 40-00 (भाग ८)
NAVNEET GALA VIKAS

F 4758

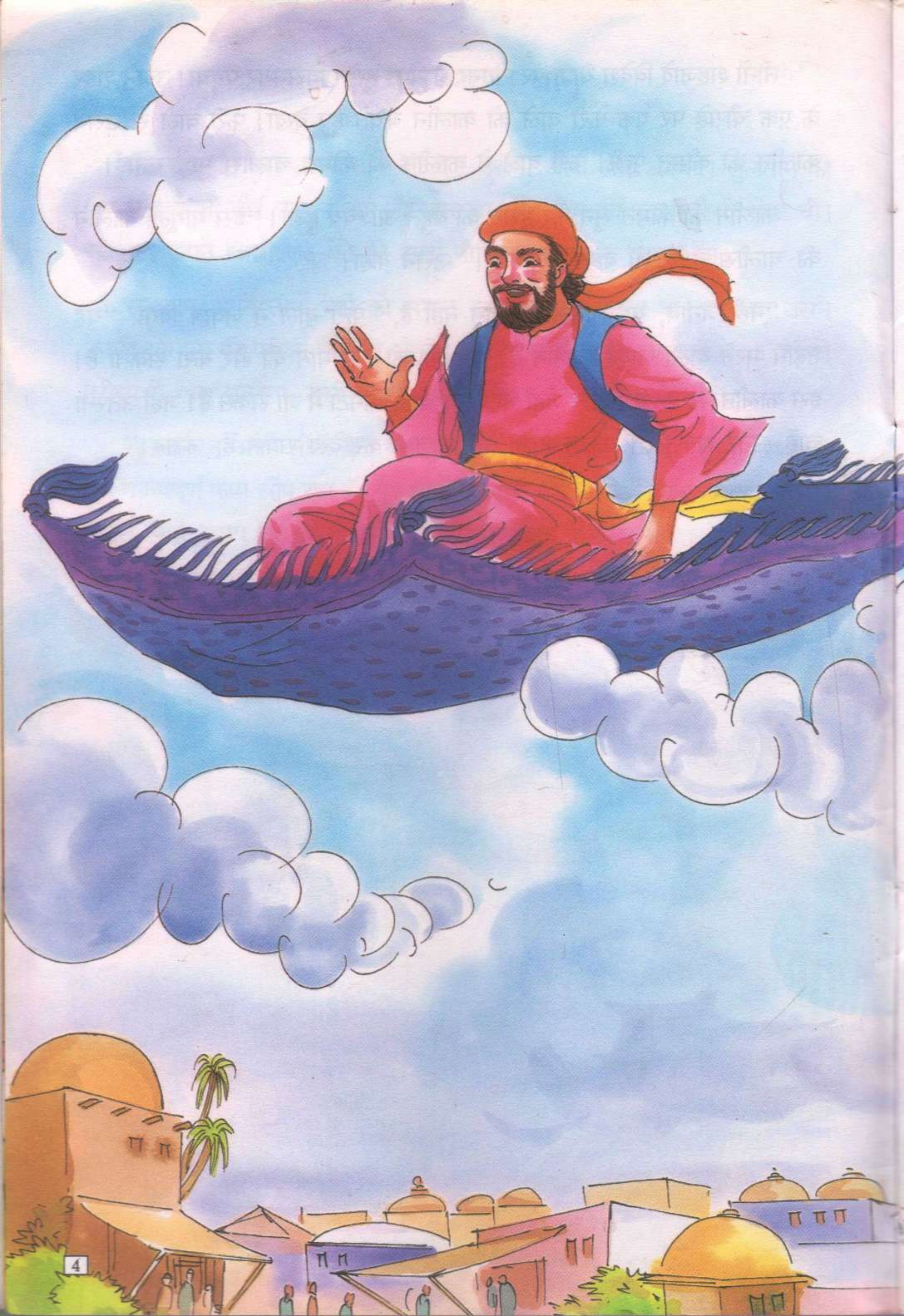

फेरी वाले की बातें सुन कर हुसेन को बहुत उत्सुकता हुई। आजमाइश करने के लिए वह कालीन पर बैठ गया। फिर उसने विसनगर शहर की सैर करने की मंशा जाहिर की।

कालीन उसे ले कर शहर के ऊपर उड़ने लगा। शहर का चक्कर लगा कर हुसेन ने फिर चौराहे पर लौटने की इच्छा जाहिर की। कालीन उसे ले कर चौराहे पर आ कर नीचे उतरा।

हुसेन की खुशी का ठिकाना न रहा। उसने सोचा, इस कालीन से बेहतर उपहार पिताजी के लिए और कुछ नहीं हो सकता! उसने फेरी वाले को चालीस मुहरें अदा कर कालीन खरीद लिया।

दूसरा भाई अली चलते-चलते शीराज पहुँचा। नगर के बाजार में घूमते-घूमते उसकी नजर एक दुकान में सजा कर रखी हुई शीशे की एक नली पर पड़ी। अली ने दुकानदार से इसकी कीमत पूछी।

"चालीस मुहरें।" दुकानदार ने जवाब दिया।

शीशे की नली की कीमत सुन कर अली को बहुत आश्चर्य हुआ। पर दुकानदार ने उसे समझाते हुए कहा, "कीमत सुन कर चौंकिए मत, जनाब ! यह कोई ऐसी-वैसी नली नहीं है। जादुई नली है यह। इसके द्वारा आप अपनी कोई भी मनचाही चीज देख सकते हैं।"

शीशे की नली की आजमाइश करने के लिए अली उसे हाथ में ले कर देखने लगा। उसने नली के एक सिरे पर अपनी एक आँख टिका कर सुलतान और नौनिहार को देखने की इच्छा की। नली में सुलतान और नौनिहार उसे साफ-साफ दिखाई दिए।

अली ने सोचा कि सुलतान के लिए यह सबसे अच्छा तोहफा साबित होगा। इसलिए उसने दुकानदार को चालीस मुहरें चुका कर वह शीशे की नली खरीद ली।

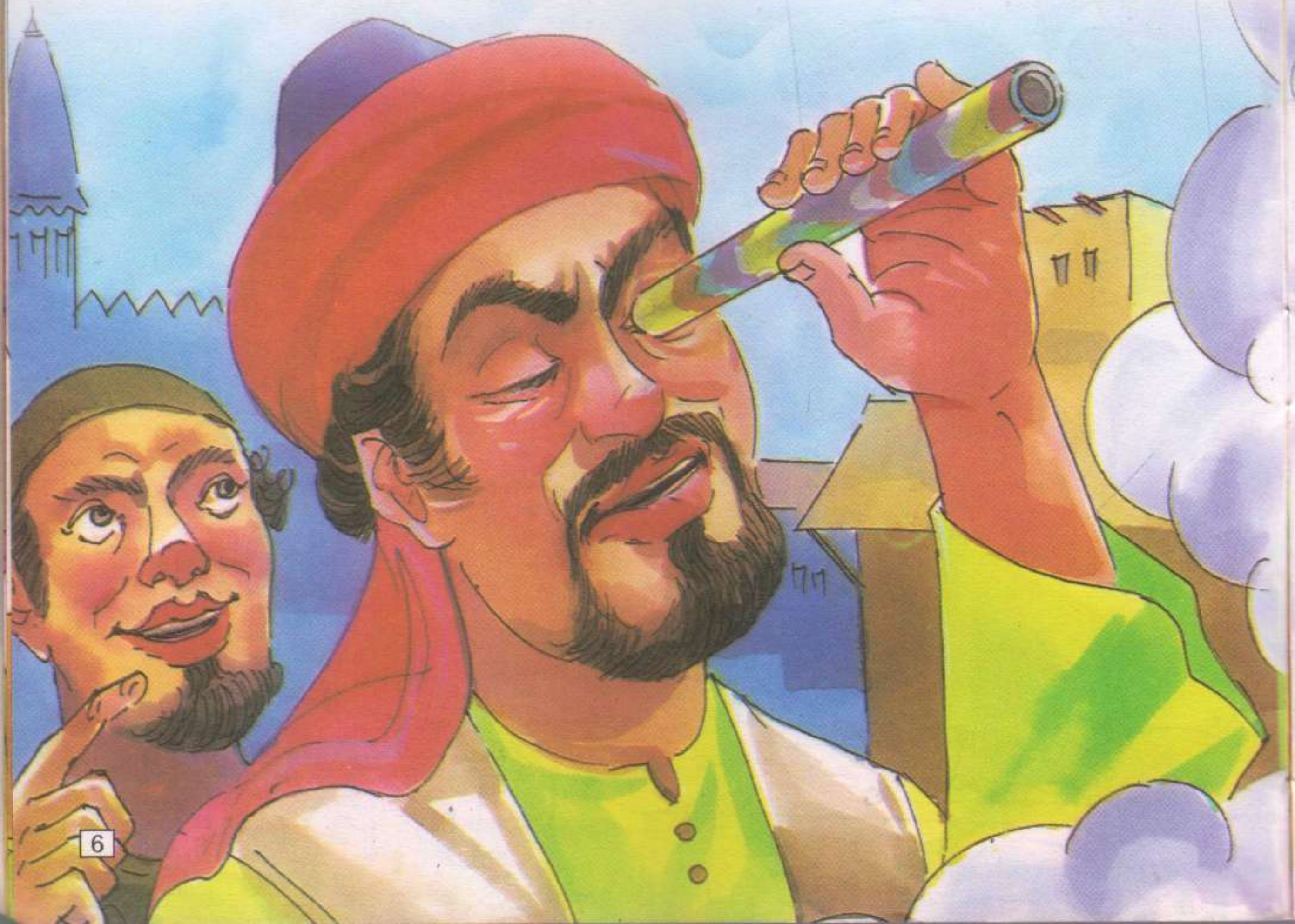

सबसे छोटा भाई अहमद समरकंद जा पहुँचा था। वह एक सड़क के किनारे से जा रहा था। तभी उसे एक फेरी वाले की आवाज सुनाई दी, "ले लो, सेब ले लो! चालीस मुहर का एक सेब!"

सुन कर अहमद ठिठक गया। उसे बहुत ताज्जुब हुआ – "एक सेब की कीमत चालीस मुहरें?" उससे रहा न गया! वह फेरी वाले के पास गया और उससे बोला, "अरे भाई, तुम समरकंद के लोगों को इस तरह लूट रहे हो? हमारे देश में तो चालीस मुहरों में चालीस टोकरे सेब मिल जाते हैं।"

फेरी वाला मुस्कराते हुए बोला, "जनाब, यह उस तरह का सेब नहीं है। यह एक अद्‌भुत चीज है। इस सेब की खासियत यह है कि बीमारी कैसी भी हो, मरीज के इस सेब को छू लेने से वह फौरन दूर हो जाती है।"

"क्या तुम इसका कोई प्रमाण दे सकते हो?" अहमद ने फेरी वाले से पूछा।

"क्यों नहीं? आइए मेरे साथ!" फेरी वाला अहमद को अपने साथ ले कर एक मकान के पास गया। वहाँ एक बीमार आदमी लेटा हुआ कराह रहा था। फेरी वाले ने उसके शरीर से सेब का स्पर्श कराया। सेब का स्पर्श करते ही मरीज उठ बैठा। वह एकदम भला-चंगा हो गया।

अहमद ने सोचा कि यह चमत्कारी सेब उसके पिता के लिए उत्तम उपहार साबित होगा। उसने फेरी वाले को चालीस मुहरें दे कर उससे चमत्कारी सेब खरीद लिया।

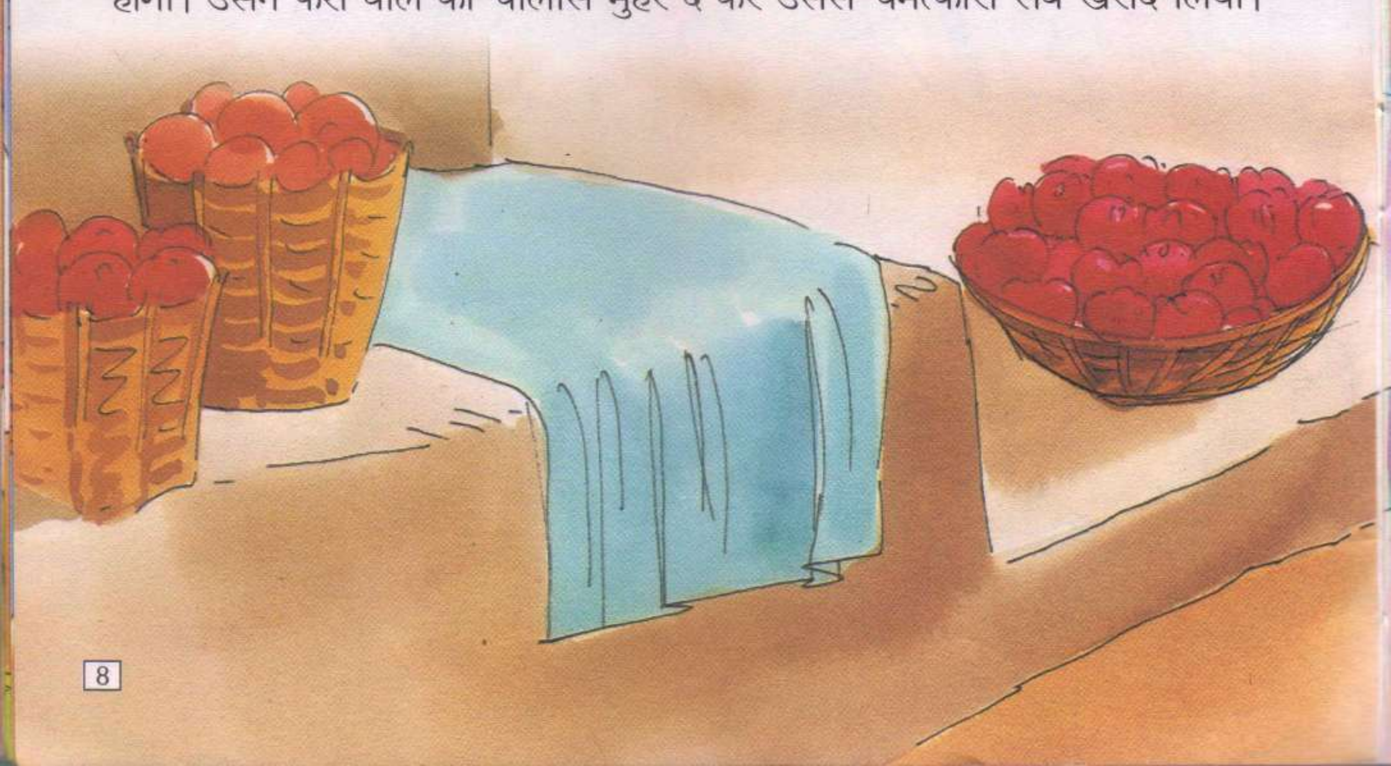

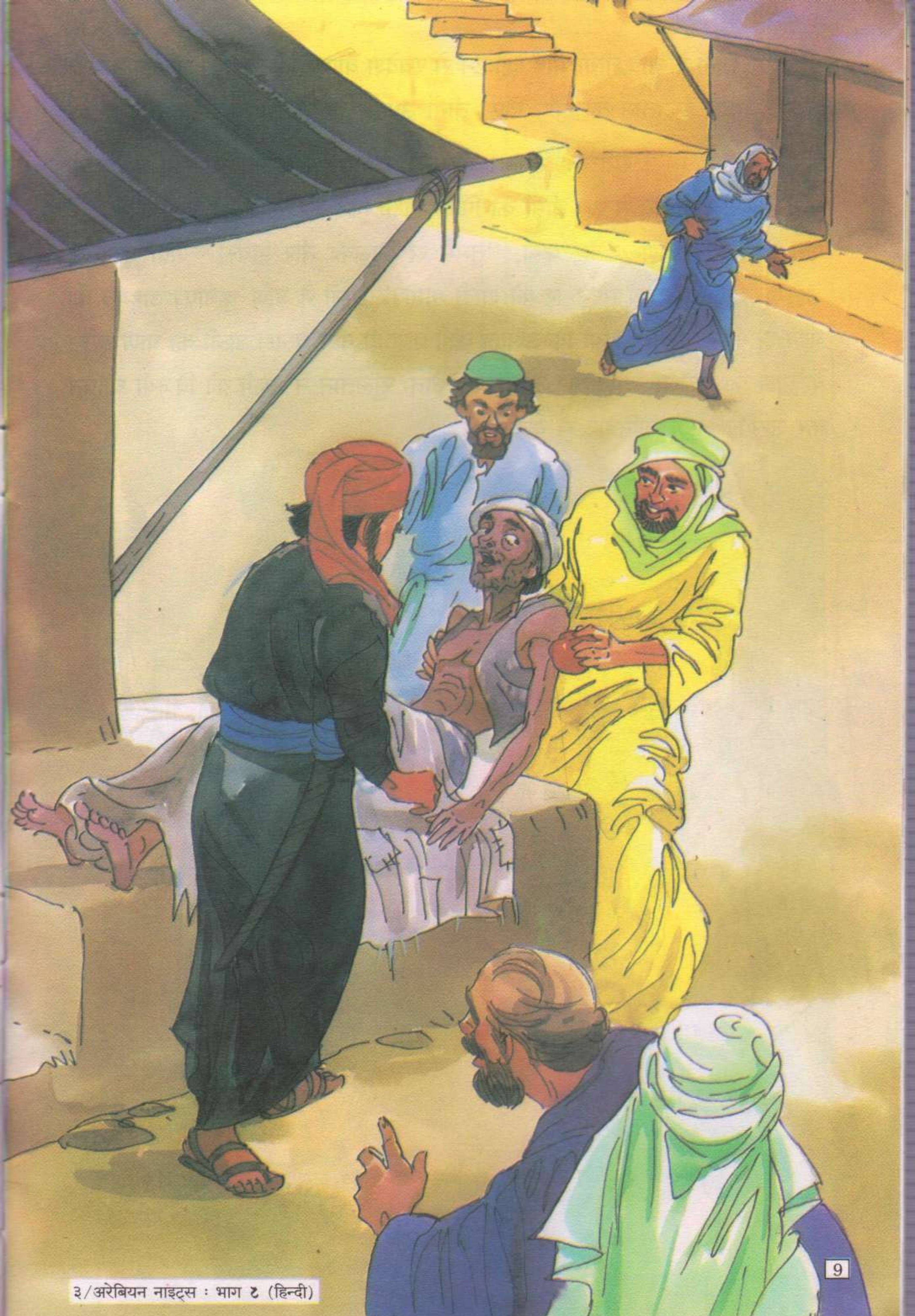

इससे हुसेन को इतना सदमा लगा कि वह महल छोड़ कर फकीर बन गया।

अहमद बहुत ही बहादुर और हिम्मत वाला नौजवान था। उसने सोचा—"मेरे बाण का पता नहीं चला तो क्या हुआ? सबसे ज्यादा दूर तक तो मेरा ही बाण गया था। मेरे साथ अन्याय हुआ है। जब तक मैं अपने बाण को खोज नहीं निकालूँगा, तब तक चैन से नहीं बैठूँगा।"

फिर अहमद अपने बाण का पता लगाने महल से निकल पड़ा। पर्वतों, घाटियों, नदियों, सरोवरों एवं जंगलों को पार करता हुआ वह एक चट्टान के पास पहुँचा। उसने देखा कि उसका बाण उसी चट्टान में फँसा हुआ है।

अहमद ने तुरंत लपक कर बाण खींच लिया। इस चट्टान में एक दरवाजा था। बाण खींचते ही चट्टान का दरवाजा खुल गया। अहमद तुरंत गुफा में प्रवेश कर गया। आगे जाने पर उसकी नजर एक बड़े कमरे में बैठी हुई एक अनुपम सुंदरी पर पड़ी। सुंदरी ने मुस्कराते हुए अहमद का स्वागत किया।

"क्या आप मुझे पहचानती हैं ?" अहमद ने उससे पूछा।

"हाँ, बहुत अच्छी तरह।" सुंदरी ने जवाब दिया। फिर उसने अहमद को अपने बारे में बताते हुए कहा, "मैं एक परी हूँ। मेरा नाम प्यारी बानू है। चट्टान में तुम्हारा बाण लगते ही मैंने तुम्हें देख लिया था। तुम्हारे तीनों भाइयों में से तुम्हारा ही बाण सबसे ज्यादा दूर तक गया था। तुम अपने तीनों भाइयों में सबसे ज्यादा भाग्यशाली हो। क्योंकि तुम्हारी मुलाकात मुझसे होने वाली थी। खुदा ने हम दोनों को एक-दूसरे के लिए ही बनाया है। इसीलिए नौनिहार से तुम्हारी शादी नहीं हुई।"

अहमद को परी के मन की बात समझते देर नहीं लगी। सुलतान द्वारा किए गए अन्याय से अहमद दुःखी था ही। परी की प्यार भरी बातें सुन कर उसे बहुत राहत मिली। अतः उसने परी के साथ ही रहने का निश्चय कर लिया। वे दोनों वहाँ आनंद-पूर्वक रहने लगे। इस प्रकार उन्हें साथ-साथ रहते काफी समय गुजर गया।

इधर सुलतान को अहमद की चिंता सताने लगी। उसने सोचा, "हुसेन तो पहले ही फकीर बन गया था और हमें छोड़ कर चला गया था। अब अहमद का भी कहीं पता नहीं चल रहा है!"

सुलतान के सैनिकों ने राज्य का चप्पा-चप्पा छान मारा, पर अहमद का कहीं पता नहीं चला। सुलतान को मन-ही-मन अपनी गलती पर पछतावा हो रहा था–"अहमद का बाण भले ही न मिल सका, पर उसी का बाण सबसे ज्यादा दूर तक गया था... मुझसे अन्याय हो गया। इसीलिए अहमद महल छोड़ कर चला गया। हे अल्लाह, तू उसे नौनिहार से भी ज्यादा खूबसूरत बीवी दे। वे दोनों जहाँ भी हों, सुखी रहें।" सुलतान इतना निराश हो गया कि उसने अहमद के वापस लौटने की उम्मीद छोड़ दी।

इसी बीच अहमद को एक दिन अपने घर-परिवार की याद आई। परिवार के लोगों के बारे में सोचते-सोचते उसकी आँखें भर आईं। उसने प्यारी बानू से इस बारे में चर्चा की और उससे अपने घर जाने की अनुमति माँगी।

प्यारी बानू ने कहा, "मैं तुम्हें इस शर्त पर घर जाने की अनुमति दे सकती हूँ कि तुम मुझे भी अपने साथ वहाँ ले चलो।" यह सुन कर अहमद बहुत खुश हुआ।

प्यारी बानू ने अपनी जादुई छड़ी घुमाई। देखते-ही-देखते अहमद को पंख निकल आए। वे दोनों आकाश में उड़ने लगे। उड़ते-उड़ते वे सुलतान के महल के बगीचे में जा पहुँचे। महल में बैठे-बैठे सुलतान की नजर उन पर पड़ी। "अरे! यह तो मेरा बेटा अहमद है! पर इसके तो पंख हैं! इसके साथ यह सुंदर लड़की कौन है? अच्छा! तो अल्लाह ने मेरी अर्ज सुन ली! अल्लाह ने मेरे बेटे के लिए ही इस सुंदर परी को धरती पर उतारा है। शायद इसीलिए अहमद के साथ मैं न्याय नहीं कर सका।" खुशी से झूमते हुए सुलतान ने कहा।

सुलतान अपनी खुशी को रोक नहीं पाया। वह दौड़ता हुआ बगीचे में जा पहुँचा। उसने अहमद को अपने सीने से लगा लिया और उसे जी-भर कर प्यार किया। फिर अहमद और प्यारी बानू का राजसी स्वागत किया गया। अब अहमद की समझ में आ गया कि खुदा जो भी करता है, हमेशा अच्छा ही करता है। वह बहुत दयालु है।

२. खुदादाद की पितृभक्ति

सऊदी अरब में हरान नाम का एक शहर था। इस शहर के सुलतान का नाम दियार बक्र था। उसे तीन बेगमें थीं। सुलतान के पास अपार धन-दौलत थी, मगर उसे कोई संतान न थी।

सुलतान ने संतान के लिए अनेक वर्षों तक कई उपचार किए, मन्नतें मानीं, लेकिन उसे संतान की प्राप्ति नहीं हुई।

एक रात सुलतान दियार को एक सपना दिखाई दिया। सपने में एक फकीर ने सुलतान से कहा, "सुलतान, मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम कल सुबह अपने महल के बगीचे में जाना। बगीचे का माली तुम्हें एक पका हुआ अनार देगा। उस अनार के दाने तुम अपनी तीनों बेगमों को खिला देना। इससे हर बेगम की कोख से एक-एक सुंदर पुत्र होगा।"

सुलतान बहुत खुश हुआ। दूसरे दिन सुबह उठ कर जल्दी-जल्दी तैयार हो कर वह महल के बगीचे में गया। माली ने सुलतान का स्वागत किया और उसे एक पका हुआ अनार दिया।

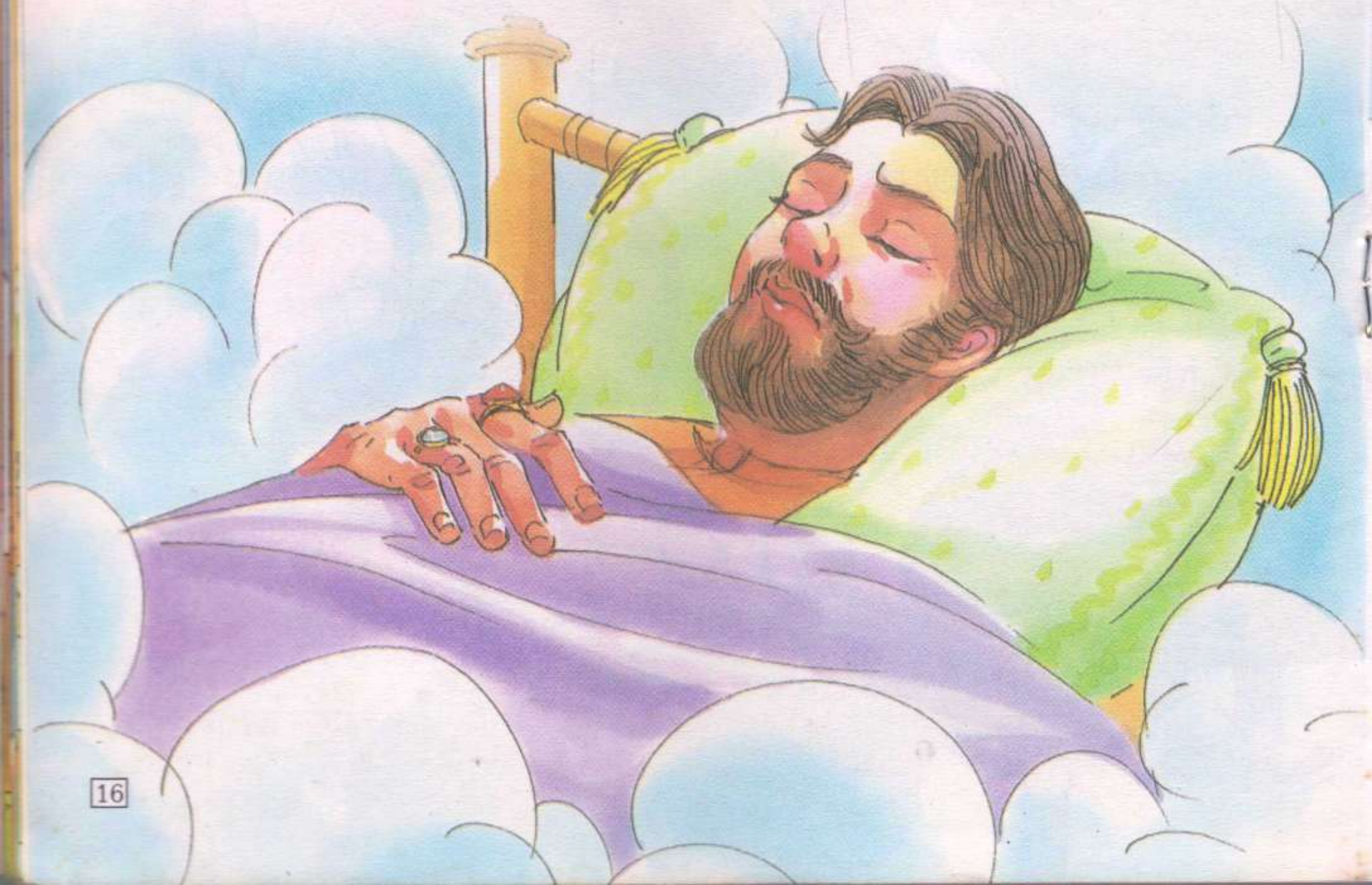

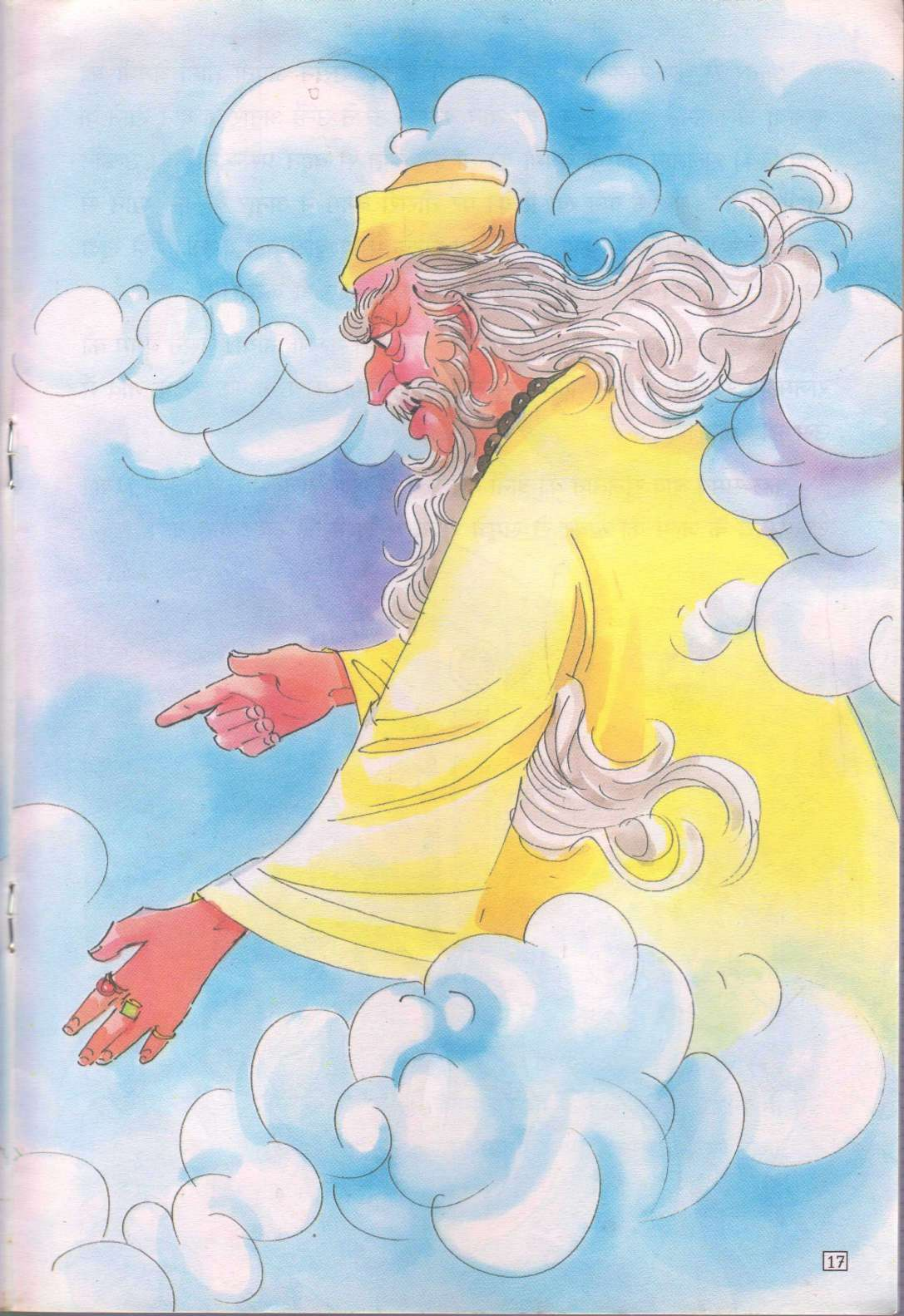

अनार ले कर सुलतान अपने महल में आया। उसने अपनी तीनों बेगमों को बुलाया और उनसे अपने सपने की बात बताई। उसने उन्हें अनार के दाने खाने के लिए दिये। सुलतान की दो बेगमों को तो इस बात से बहुत प्रसन्नता हुई। उन्होंने खुशी-खुशी अनार के दाने खा लिये। पर तीसरी बेगम ने अनार के दाने खाने से इनकार कर दिया। उसने कहा, "मैं किसी टोटके में विश्वास नहीं करती। मुझे खुदा पर पूरा यकीन है। वह जो भी करेगा, मेरे भले के लिए ही करेगा।"

तीसरी बेगम की बात सुन कर सुलतान को बहुत गुस्सा आया। उसने बेगम को राजमहल से बाहर निकाल दिया। सुलतान के सैनिक राज्य के एक दूर के गाँव में उसे छोड़ आए।

कुछ समय बाद सुलतान की दोनों बेगमों ने दो सुंदर राजकुमारों को जन्म दिया। राजकुमारों के जन्म की खबर से समूचे राज्य में खुशी की लहर दौड़ गई।

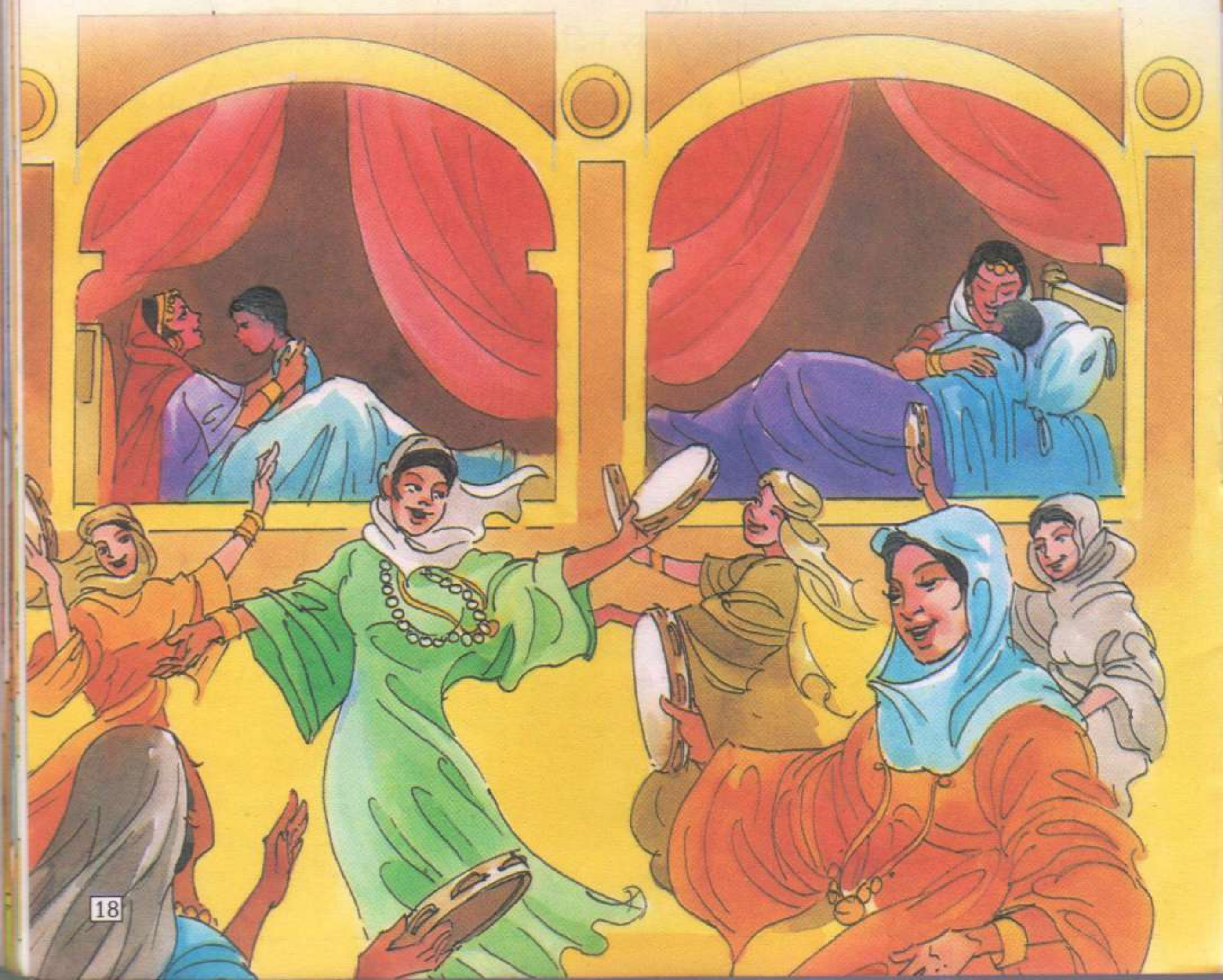

इधर खुदा ने सुलतान की तीसरी बेगम की भी फरियाद सुनी। उसने भी एक सुंदर राजकुमार को जन्म दिया। मगर स्वाभिमानी बेगम ने सुलतान को राजकुमार के जन्म की खबर नहीं दी।

बेगम ने राजकुमार का नाम खुदादाद रखा।

खुदादाद धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। बेगम राजकुमार का बहुत ध्यान रखती थी। खुदादाद बहुत सुंदर था। वह कठिनाइयों के बीच पला-बढ़ा था, इसलिए वह बहुत ही ताकतवर, साहसी और कुशल नौजवान बना। बेगम ने एक राजकुमार की तरह खुदादाद को हर तरह की शिक्षा दिलाने की व्यवस्था की। वह शीघ्र ही घुड़सवारी, तलवारबाजी तथा हर तरह के अस्त्र-शस्त्र चलाने में भी पारंगत हो गया।

खुदादाद जब समझदार हो गया, तो उसकी माँ ने उसके पिता सुलतान दियार बक्र के बारे में उसे बताया।

एक दिन खुदादाद ने अपनी माँ से कहा, "माँ, अब मैंने हर तरह की शिक्षा पा ली है। अपने ऊपर अब मुझे पूरा भरोसा है। मैं अपनी ताकत और हुनर को आजमा कर देखना चाहता हूँ। मैंने सुना है कि मेरे पिताजी के बहुत दुश्मन हैं और वे उनसे परेशान हैं। मैं उनके दुश्मनों से लोहा लेना चाहता हूँ। मैं उनकी मदद करना चाहता हूँ। मैं अपने पिताजी के नगर में जा कर उनके दुश्मनों का सफाया करूँगा। उसके बाद ही मैं उन्हें अपना परिचय दूँगा।"

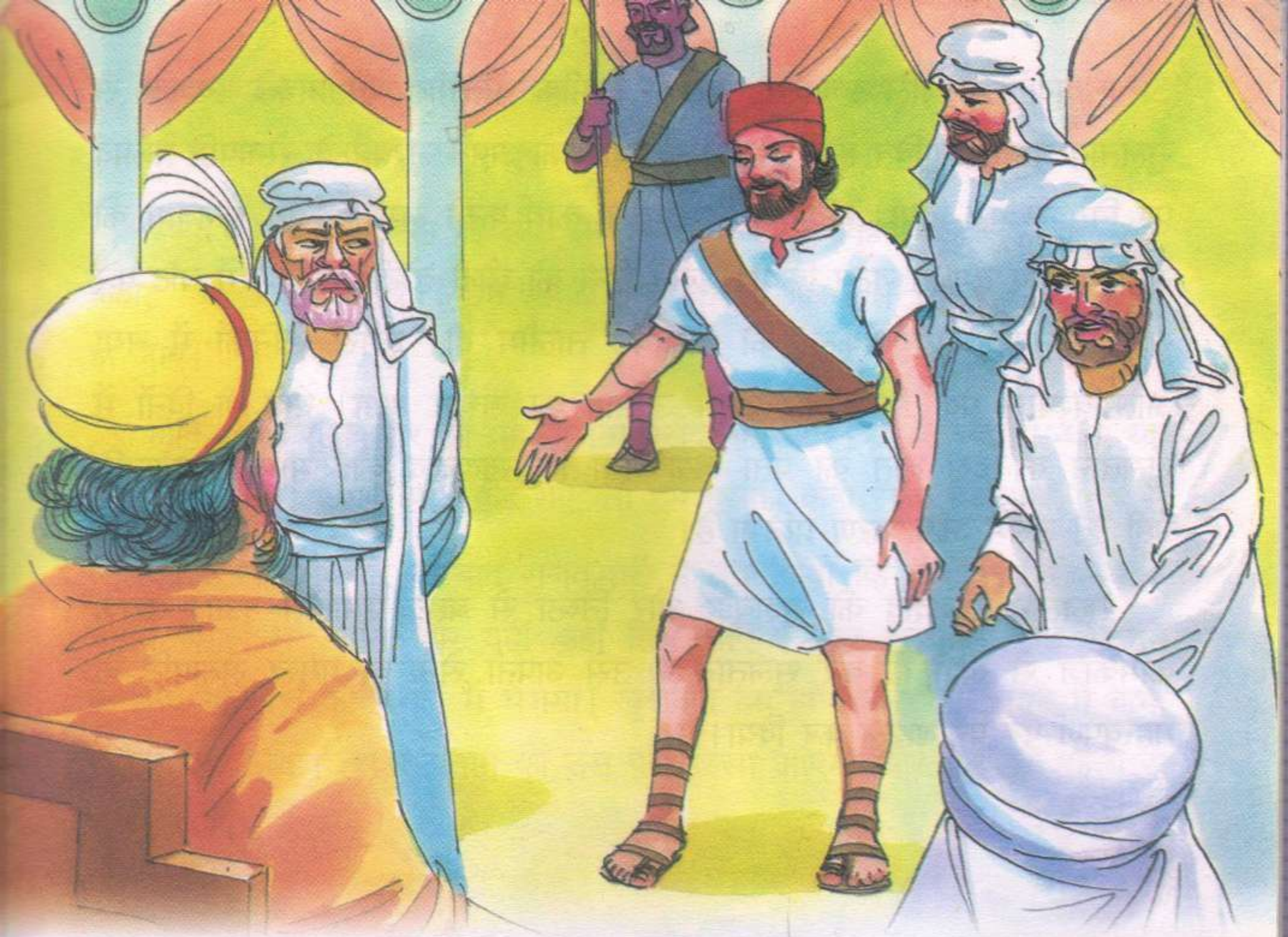

खुदादाद की माँ अपने बेटे को अपने से दूर भेजना नहीं चाहती थी। पर उसे अपने बेटे के साहस व बहादुरी पर पूरा भरोसा था। पिता के प्रति उसके प्रेम को देखते हुए माँ ने उसे हरान जाने की अनुमति दे दी।

उसने खुदादाद को आशीर्वाद देते हुए कहा, ''बेटा, मुझे तुम पर नाज़ है। जाओ, अपने पिता के दुश्मनों को हरा कर उनकी कीर्ति को और बढ़ाओ। खुदा हमेशा तुम्हारी मदद करेगा।''

खुदादाद अपने घोड़े पर सवार हो कर सुलतान दियार बक्र के महल की ओर रवाना हो गया।

वह सीधे सुलतान के दरबार में जा पहुँचा। उसने सुलतान की कुर्निश बजाते हुए उससे कहा, ''जहाँपनाह, मैं काहिरा के एक अमीर का बेटा हूँ। मैंने अस्त्र-शस्त्र चलाने की विधिवत शिक्षा ली है। मैं आपकी सेना में भर्ती हो कर देश की सेवा करना चाहता हूँ। आपकी सेना में मुझे उचित स्थान मिलेगा, इस आशा से मैं आपके पास आया हूँ।''

खुदादाद के बलिष्ठ शरीर, उसकी निर्भीक बातचीत एवं अच्छे स्वभाव से सुलतान बहुत प्रभावित हुआ। उसने खुदादाद को अपने लश्कर के सेनापति के पद पर नियुक्त कर दिया। खुदादाद निष्ठापूर्वक कार्य करने लगा। उसने सुलतान की सेना का नए ढंग से गठन किया। उसने सेना को छोटी-छोटी टुकड़ियों में बाँट कर सभी सैनिकों को युद्धकला की विधिवत तालीम दी। इससे सैनिकों में नया आत्मविश्वास पैदा हुआ और उनमें उत्साह का संचार हुआ। थोड़े ही दिनों में सुलतान को इस बात का पता चल गया कि खुदादाद कोई मामूली सेनापति नहीं है! उसमें असाधारण प्रतिभा है।

सुलतान खुदादाद की सूझबूझ और निष्ठा से बहुत प्रभावित हुआ। उसके कामकाज से खुश हो कर सुलतान ने उसे अपनी सेना के प्रमुख सेनापति के महत्त्वपूर्ण पद पर बहाल कर दिया।

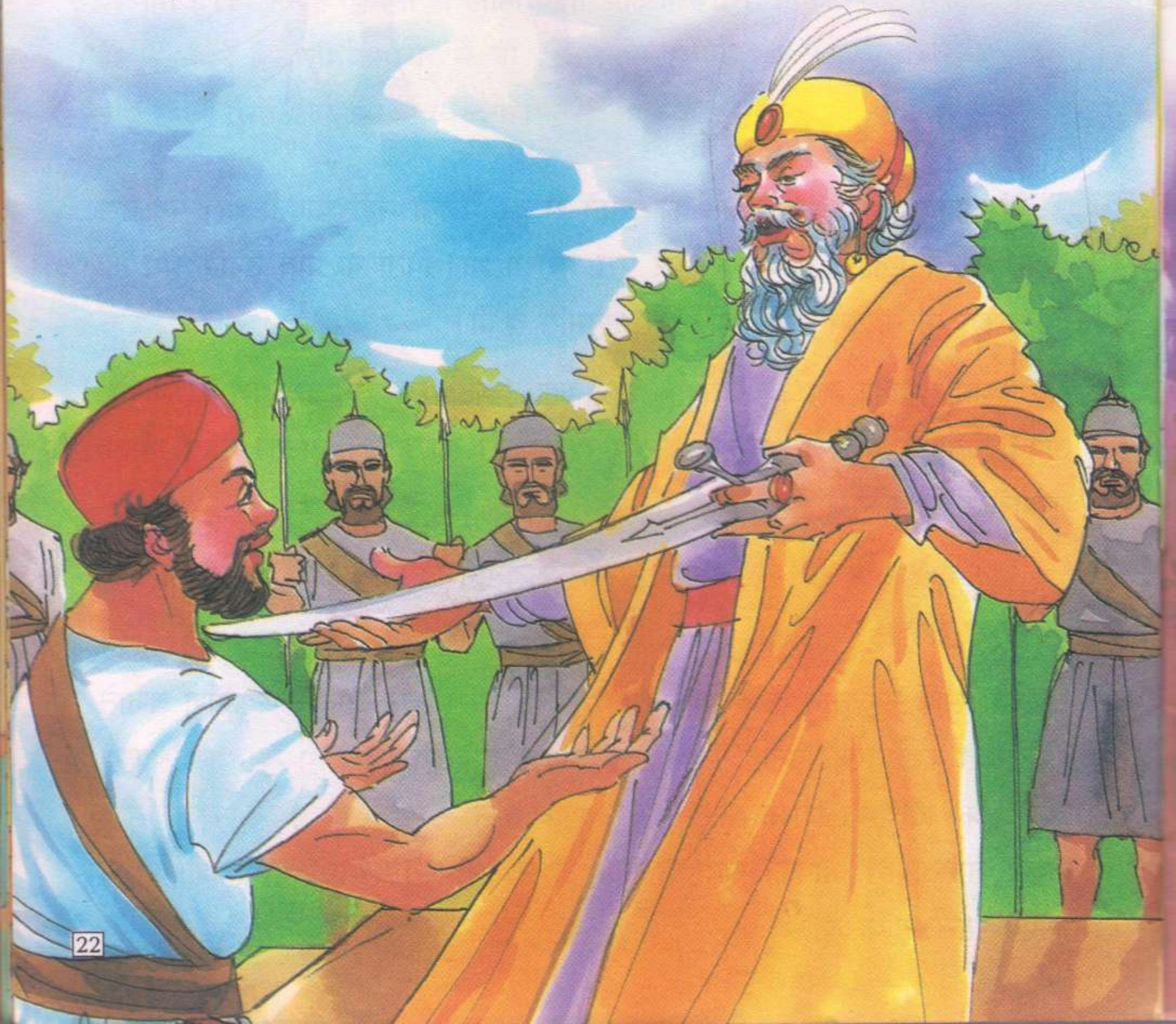

खुदादाद के बढ़ते महत्त्व को देख कर सुलतान के दरबारी और उसके दोनों बेटे चिंतित हो उठे। इसलिए उन्हें खुदादाद से ईर्ष्या होने लगी।

ईर्ष्या की आग में जल रहे छोटे राजकुमार ने बड़े राजकुमार को सुझाव देते हुए कहा, ''अच्छा तो यह है कि हम इसकी हत्या कर दें और हमारे रास्ते का कंटक दूर हो जाए।''

लेकिन बड़े राजकुमार को यह योजना पसंद नहीं आई। उसने कहा, ''नहीं, यह ठीक नहीं होगा। अगर हम पकड़े गए, तो हमें इसकी कड़ी सजा मिलेगी।''

काफी सोच-विचार के बाद राजकुमारों ने तय किया कि वे शिकार खेलने के बहाने जंगल में जाएँगे और वहीं कहीं छिप जाएँगे। फिर सुलतान उन्हें खोजने के लिए खुदादाद को जंगल में भेजेगा। खुदादाद हम लोगों को खोज पाने में कभी सफल नहीं होगा। तब सुलतान को उस पर गुस्सा आएगा और वह उसे राज्य से बाहर निकाल देगा।

अपनी योजना के अनुसार दोनों राजकुमार घोड़े पर सवार हो कर शिकार करने जंगल में गए और घर वापस नहीं लौटे।

राजकुमारों को शिकार पर गए हुए दो दिन बीत गए। अब सुलतान को चिंता होने लगी। उसने खुदादाद को बुला कर कहा, "तुरंत जाओ और मेरे दोनों बेटों का पता लगा कर उन्हें वापस ले आओ। अगर तुम उन्हें वापस नहीं ला सके, तो तुम्हें फाँसी दे दी जाएगी।"

खुदादाद ने सुलतान की चुनौती स्वीकार कर ली। वह अपने घोड़े पर सवार हो कर राजकुमारों का पता लगाने जंगल की ओर निकल पड़ा। उसने जंगलों, पहाड़ों, घाटियों और गुफाओं को छान मारा, पर राजकुमारों का कहीं पता नहीं चला।

जंगल में भटकते-भटकते खुदादाद की नजर एक महल पर पड़ी। वह उस ओर मुड़ गया। नजदीक जाने पर उसने महल के एक झरोखे में एक सुंदर लड़की को बैठे हुए देखा। लड़की बहुत उदास थी।

लड़की की नजर खुदादाद पर पड़ी। उसने खुदादाद को चेतावनी देते हुए जोर-जोर से चिल्लाते हुए कहा, "अरे, इधर मत आना। जितनी तेजी से भाग सकते हो, भाग जाओ यहाँ से। यहाँ एक भयानक राक्षस रहता है। उसने तुम्हें देख लिया, तो मार डालेगा।"

"कहाँ है राक्षस ?" खुदादाद ने उस युवती से पूछा।

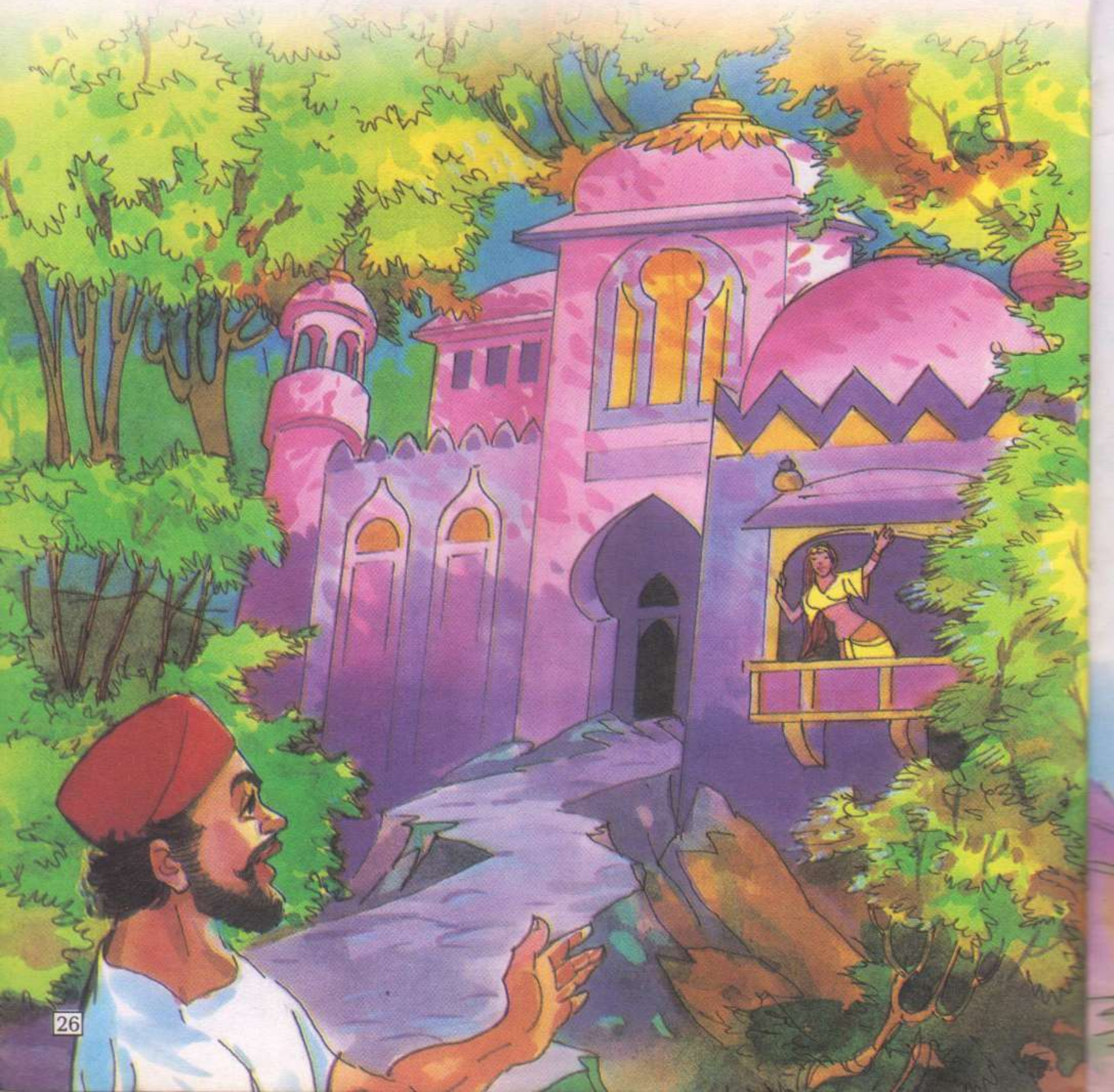

"अभी वह कहीं बाहर गया हुआ है। उसने हम जैसे अनेक लोगों को यहाँ बंदी बना कर रखा है। मैं काहिरा की राजकुमारी हूँ। यह मुझे काहिरा से उठा कर यहाँ लाया है। यह हममें से रोज एक आदमी को मार कर खा जाता है।" घबराई हुई लड़की ने जवाब दिया।

पर खुदादाद इससे जरा भी भयभीत नहीं हुआ। उसने राक्षस से लोहा लेने की ठान ली।

कुछ समय के बाद राक्षस आ पहुँचा। उसका शरीर छोटे-मोटे पहाड़ जैसा विशाल था। उसके सिर पर दो बड़े-बड़े नुकीले सींग और मुँह में बड़े-बड़े दाँत थे। उसके हाथों के नाखून बहुत बड़े-बड़े और नोकदार थे। खुदादाद को देख कर उसकी आँखों में खून उतर आया।

पर खुदादाद राक्षस का विकराल रूप देख कर भयभीत नहीं हुआ। वह बहुत बहादुर और साहसी योद्धा था। वह तुरंत अपनी पूरी ताकत के साथ राक्षस पर टूट पड़ा। पर राक्षस भी कुछ कम नहीं था। उसने खुदादाद को पकड़ लिया और उसे जान से मार डालने की कोशिश करने लगा। पर बलवान खुदादाद के सामने उसकी एक न चली।

काफी देर तक लड़ते रहने के बाद राक्षस बुरी तरह हताश हो गया। अंत में खुदादाद ने राक्षस के दोनों हाथ पकड़ कर उसे जमीन पर पटक दिया। देखते-ही-देखते राक्षस के प्राण निकल गए।

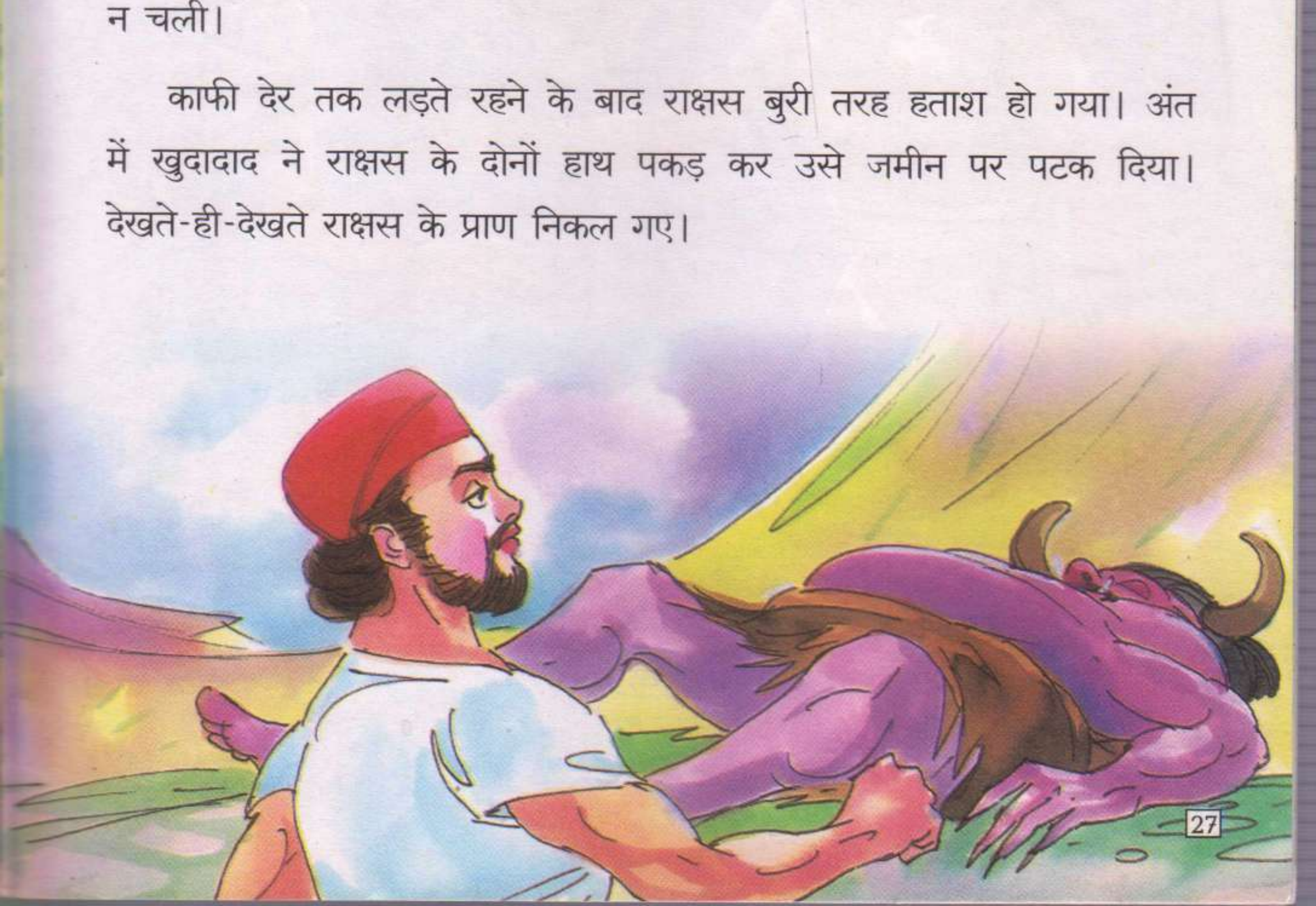

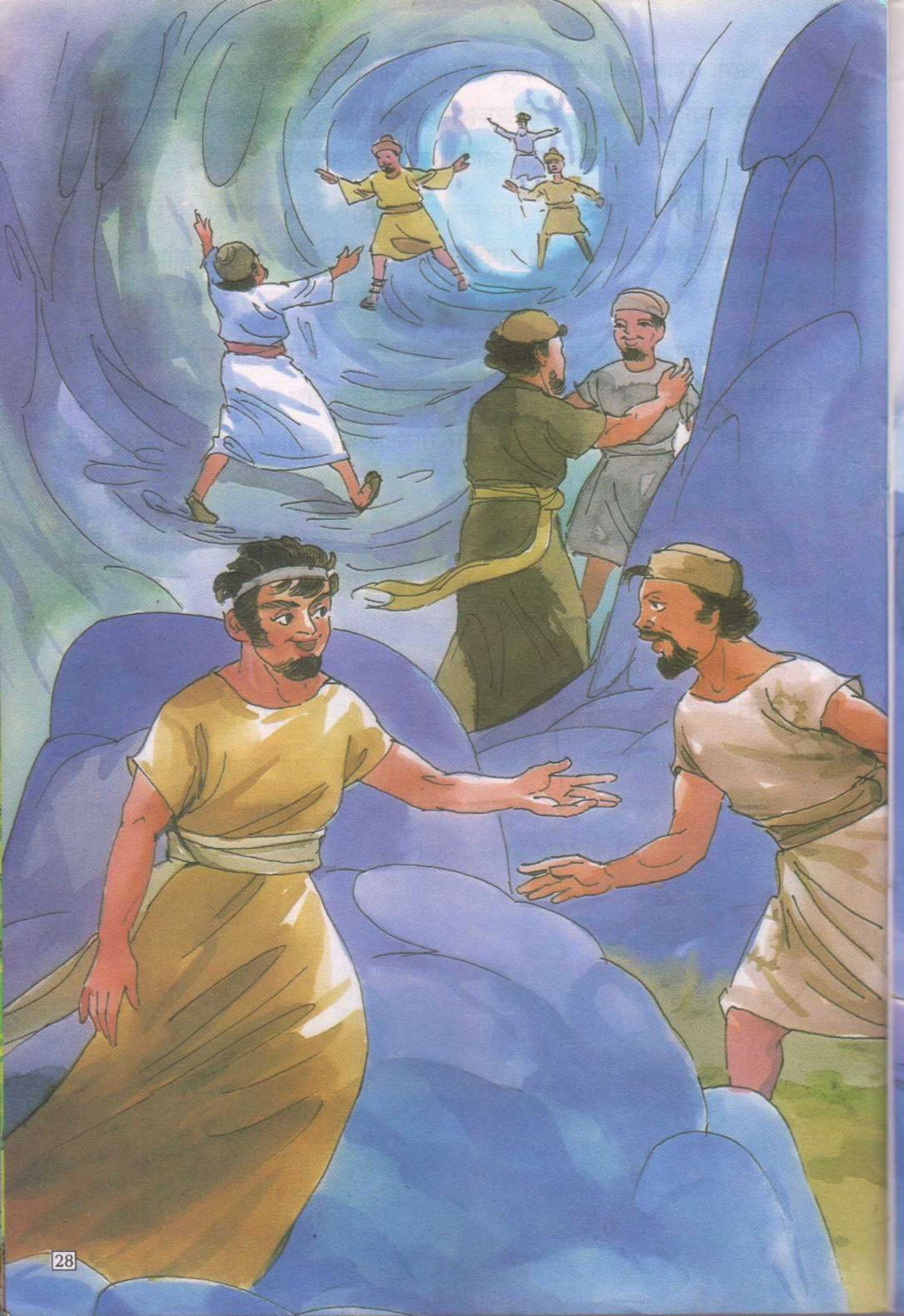

खुदादाद का पराक्रम देख कर काहिरा की राजकुमारी फूली नहीं समाई। वह खुदादाद को महल के उस तहखाने में ले गई, जहाँ राक्षस ने सैकड़ों लोगों को कैद करके रखा था।

खुदादाद ने सभी कैदियों को मुक्त कर दिया। इन कैदियों में सुलतान के दोनों बेटे भी थे। खुदादाद को देख कर दोनों राजकुमार बहुत खुश हुए और दौड़ते हुए आ कर उसके गले लग गए।

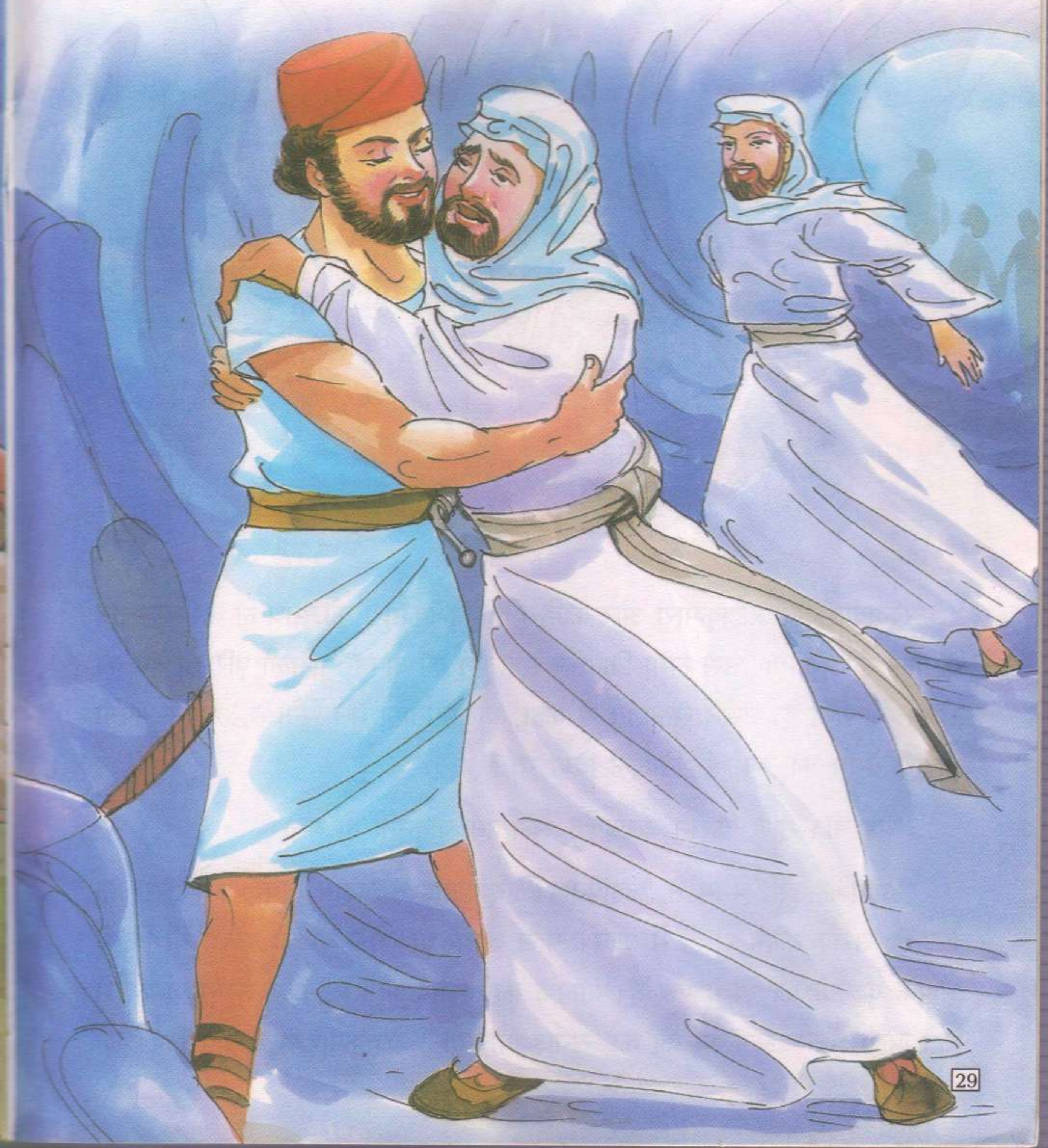

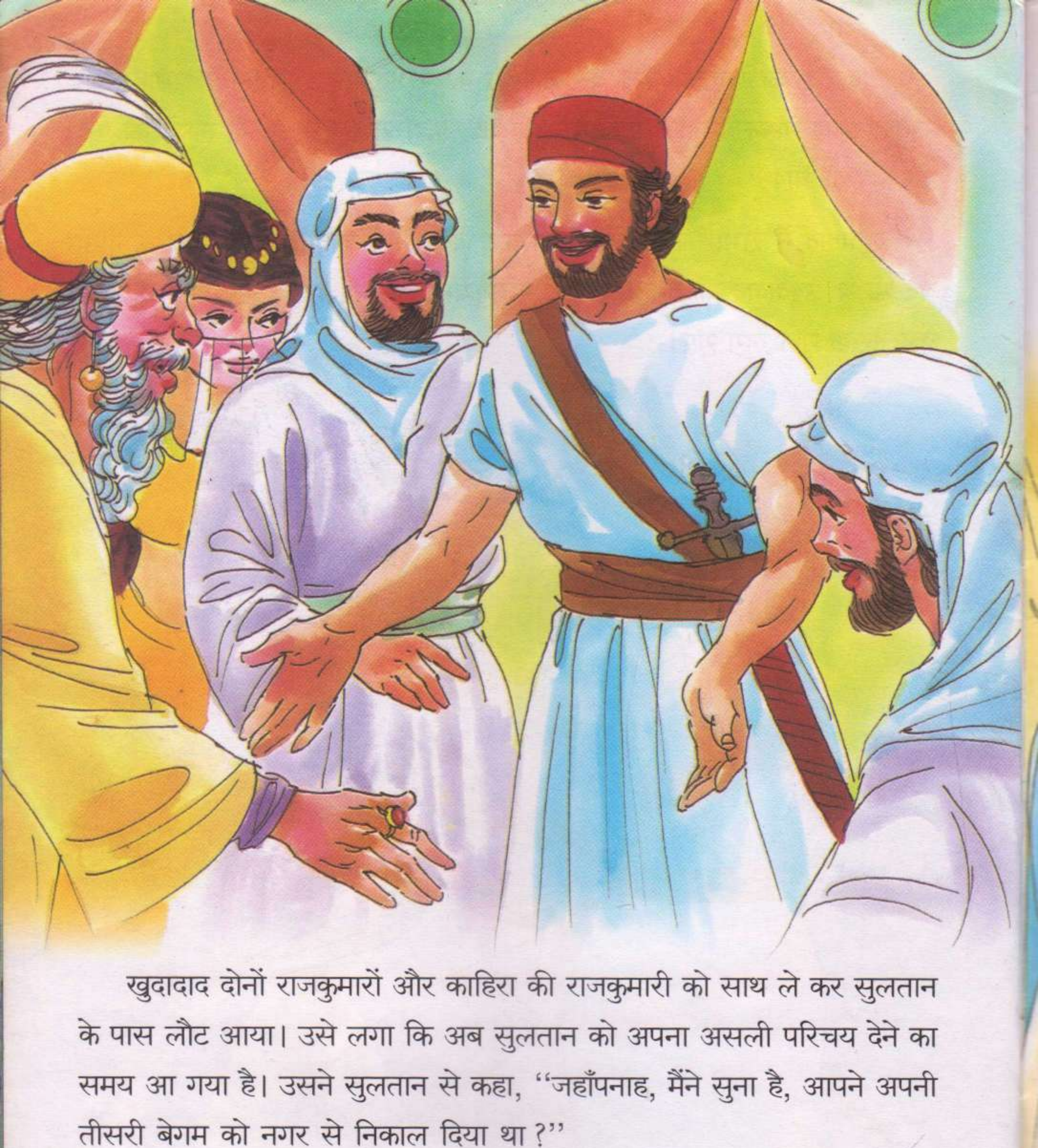

खुदादाद दोनों राजकुमारों और काहिरा की राजकुमारी को साथ ले कर सुलतान के पास लौट आया। उसे लगा कि अब सुलतान को अपना असली परिचय देने का समय आ गया है। उसने सुलतान से कहा, ''जहाँपनाह, मैंने सुना है, आपने अपनी तीसरी बेगम को नगर से निकाल दिया था?''

''यह बात तुम्हें किसने बताई?'' सुलतान चौकन्ना हो गया।

''आपकी उसी बेगम ने, जहाँपनाह।'' खुदादाद ने जवाब दिया, ''मैं उसी का बेटा हूँ। उसके कहने से ही मैं आपके पास आया था। मेरी माँ की इच्छा थी कि मैं आपके दुश्मनों को खत्म कर दूँ। आपके कुछ काम आऊँ।'' फिर उसने जंगल में घटी सारी घटना सुलतान क़ो कह सुनाई और दोनों राजकुमार उसे सौंप दिए।

सुलतान खुदादाद को देखता रह गया। उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह अपने तीसरे राजकुमार की बहादुरी से बहुत प्रभावित हुआ। उसने आगे बढ़ कर खुदादाद को गले लगा लिया। सुलताननने अपनी निष्कासित बेगम को सम्मान सहित महल में वापस बुला लिया और उससे अपनी भूल के लिए माफी माँगी।

सुलतान ने काहिरा की राजकुमारी के साथ खुदादाद की शादी कर दी और सब लोग आनंदपूर्वक रहने लगे।

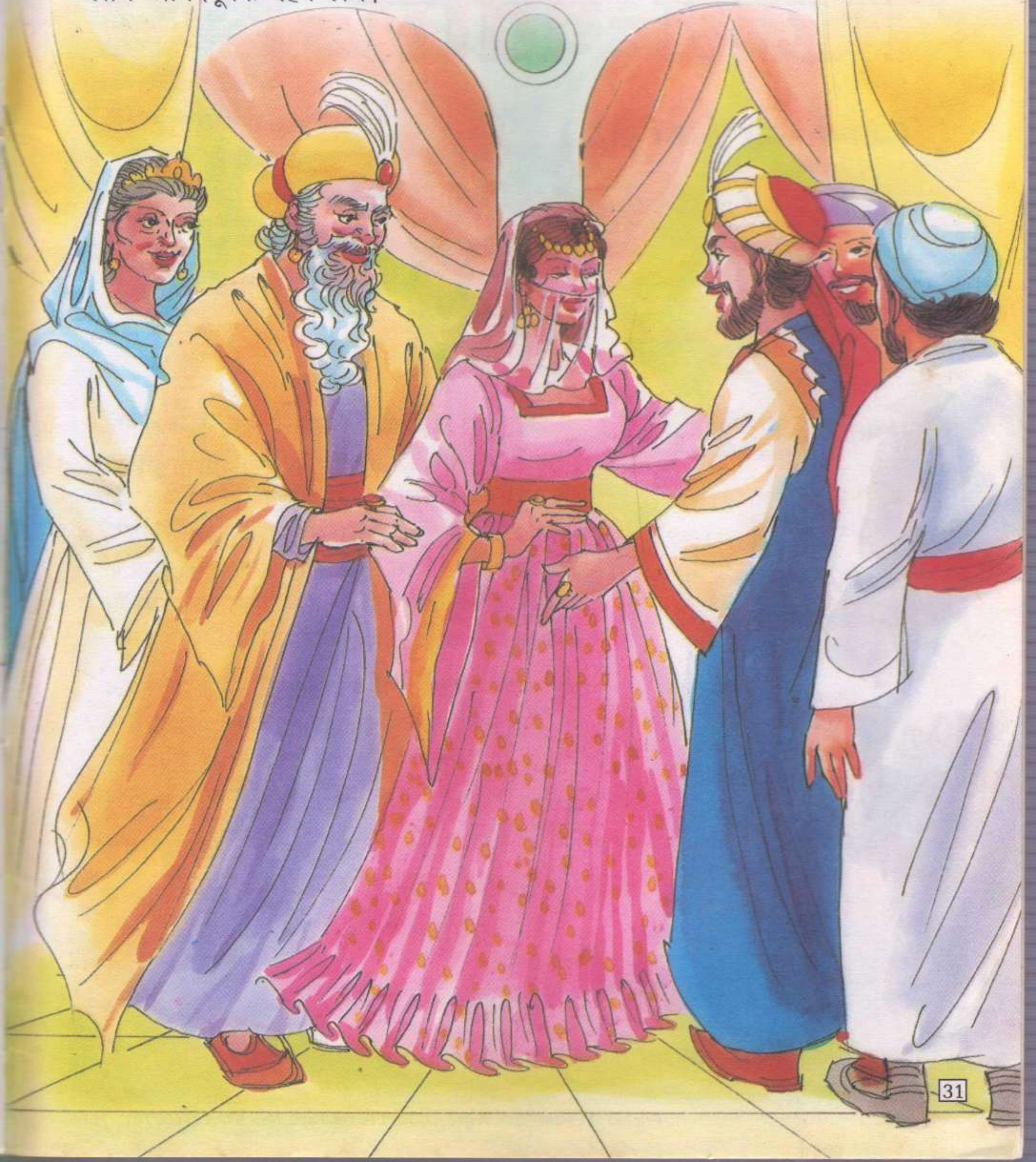

अमर बाल साहित्य

विक्रम-वेताल

(भाग १ से ५ का सेट)

विश्व बाल साहित्य में 'विक्रम-वेताल' की कहानियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। विक्रम संवत् सात सौ में संस्कृत में रचित 'कथासरित्सागर' में विक्रम और वेताल की पच्चीस कहानियाँ दी गई हैं। अद्भुत, भयानक, करुण, हास्य आदि सभी नौ रसों से सराबोर ये कहानियाँ बच्चों के दिलों में घर कर जाएँगी तथा उनकी प्रतिभा को विकसित करेंगी।

'विक्रम-वेताल' की ये कहानियाँ बच्चों को पसंद आने वाली सहज-सरल भाषा तथा रोचक एवं दृश्य शैली में लिखी गई हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर रंग-बिरंगे एवं सुंदर चित्र बच्चों का मन मोह लेने वाले तथा चित्रकला के प्रति उनकी रुचि जगाने वाले हैं।

अँग्रेजी, गुजराती और मराठी भाषाओं में भी उपलब्ध।

NAVNEET®

H

Printed at : Para-Pack, A-246, MIDC, TTC, Mahape, Navi Mumbai-400 701. 11 06

अमर
बाल साहित्य

अरेबियन नाइट्स

(भाग १ से ८ का सेट)

इस पुस्तक-शृंखला की काल्पनिक, प्राचीन, परीकथात्मक एवं रोमांचक कहानियाँ बच्चों का न सिर्फ नैतिकता एवं व्यावहारिकता से परिचय कराती हैं, बल्कि ये उनके शब्द-भंडार को समृद्ध करने एवं उनकी भाषा में निखार लाने में भी सहायक सिद्ध होंगी।

भाग १

१. अलादीन और जादुई चिराग

२. मनमौजी और नवाब

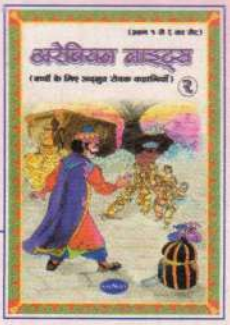

भाग २

१. नौवीं मूर्ति

२. एक दिन का बादशाह

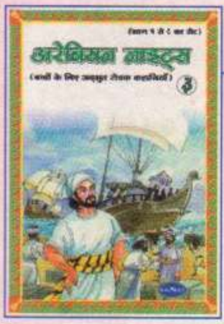

भाग ३

१. साहसी सिंदबाद

२. गुलाम का जरा-सा झूठ

भाग ४

१. अलीबाबा और चालीस चोर

२. गधे की सीख

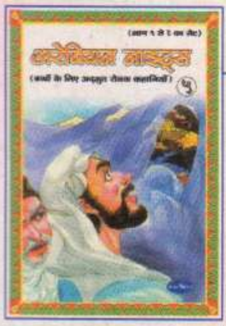

भाग ५

१. कहानी का चमत्कार

२. तमाचे खाने वाला अंधा भिखारी

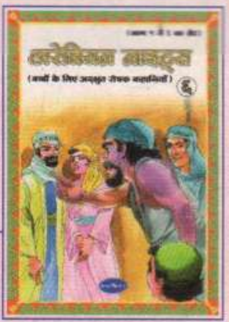

भाग ६

१. अखरोट का मर्तबान

२. हसन रस्सीवाला

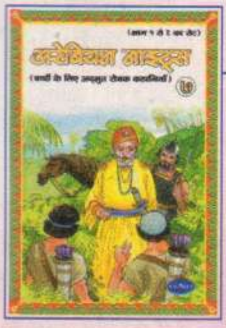

भाग ७

परीज़ादा और उसके भाई

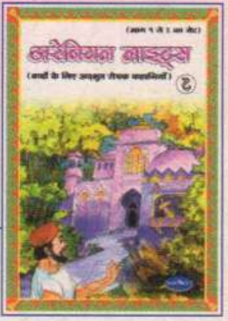

भाग ८

१. परी प्यारी बानू

२. खुदादाद की पितृभक्ति

भारत के बाल साहित्य को और अधिक समृद्ध करने की दिशा में हमारा एक नम्र प्रयास। — ***प्रकाशक***

Cover Printed at : Para-Pack

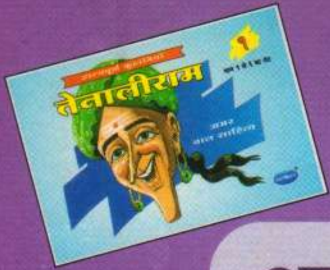

अमर बाल साहित्य

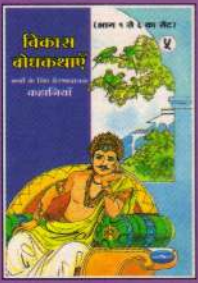

(१) चटपटी कहानियाँ	(भाग १ से ४ का सेट)
(२) कहानियाँ ही कहानियाँ	(भाग १ से ४ का सेट)
(३) अनुपम कहानियाँ	(भाग १ से ४ का सेट)
(४) मोहक कहानियाँ	(भाग १ से ४ का सेट)
(५) कहानियों का ख़जाना	(भाग १ से ४ का सेट)
(६) विकास रंगबिरंगी कहानियाँ	(सात पुस्तकों का सेट)
(७) चतुर बीरबल	(भाग १ से ४ का सेट)
(८) परी-कथाएँ	(भाग १ से ४ का सेट)
(९) विकास बोधकथाएँ	(भाग १ से ६ का सेट)
(१०) अरेबियन नाइट्स	(भाग १ से ८ का सेट)
(११) महाकाव्य महाभारत	(बच्चों के लिए)
(१२) महाकाव्य रामायण	(बच्चों के लिए)
(१३) रामायण के अमर पात्र	(भाग १ से ४ का सेट)
(१४) महाभारत के अमर पात्र	(भाग १ से ५ का सेट)
(१५) पंचतंत्र	(भाग १ से ५ का सेट)
(१६) हितोपदेश	(भाग १ से ५ का सेट)
(१७) इसपनीति	(भाग १ से ५ का सेट)
(१८) तेनालीराम	(भाग १ से ६ का सेट)
(१९) मुल्ला नसरुद्दीन	(भाग १ से ५ का सेट)
(२०) विक्रम-वेताल	(भाग १ से ५ का सेट)
(२१) सिंहासन बत्तीसी	(भाग १ से ५ का सेट)
(२२) कृष्णलीला	(भाग १ से ८ का सेट)

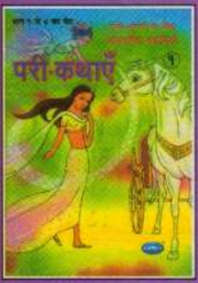

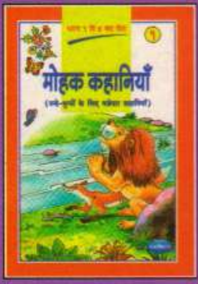

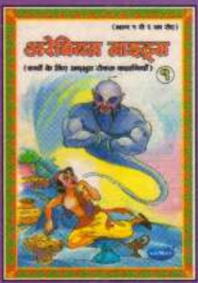

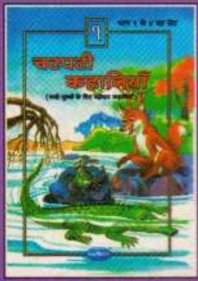

आपके बच्चे की वर्षगाँठ हो या परिवार में कोई शुभ अवसर,
बच्चों को कहानियों के ये सेट भेंट के रूप में दीजिए।
इससे आपको 'एक सुंदर कार्य' करने का संतोष प्राप्त होगा।

F 4758

ISBN 978-81-243-0960-5

9 788124 309605

बालकथाओं की उपर्युक्त पुस्तकें
अँग्रेजी, मराठी और गुजराती
भाषाओं में भी उपलब्ध हैं।

NAVNEET®

Knowledge is wealth

H